१. गायों ने की प्राणों की रक्षा

रोहित के सरल मन में उठनेवाले सरल प्रश्नों से उसके मित्र परेशान रहते थे।

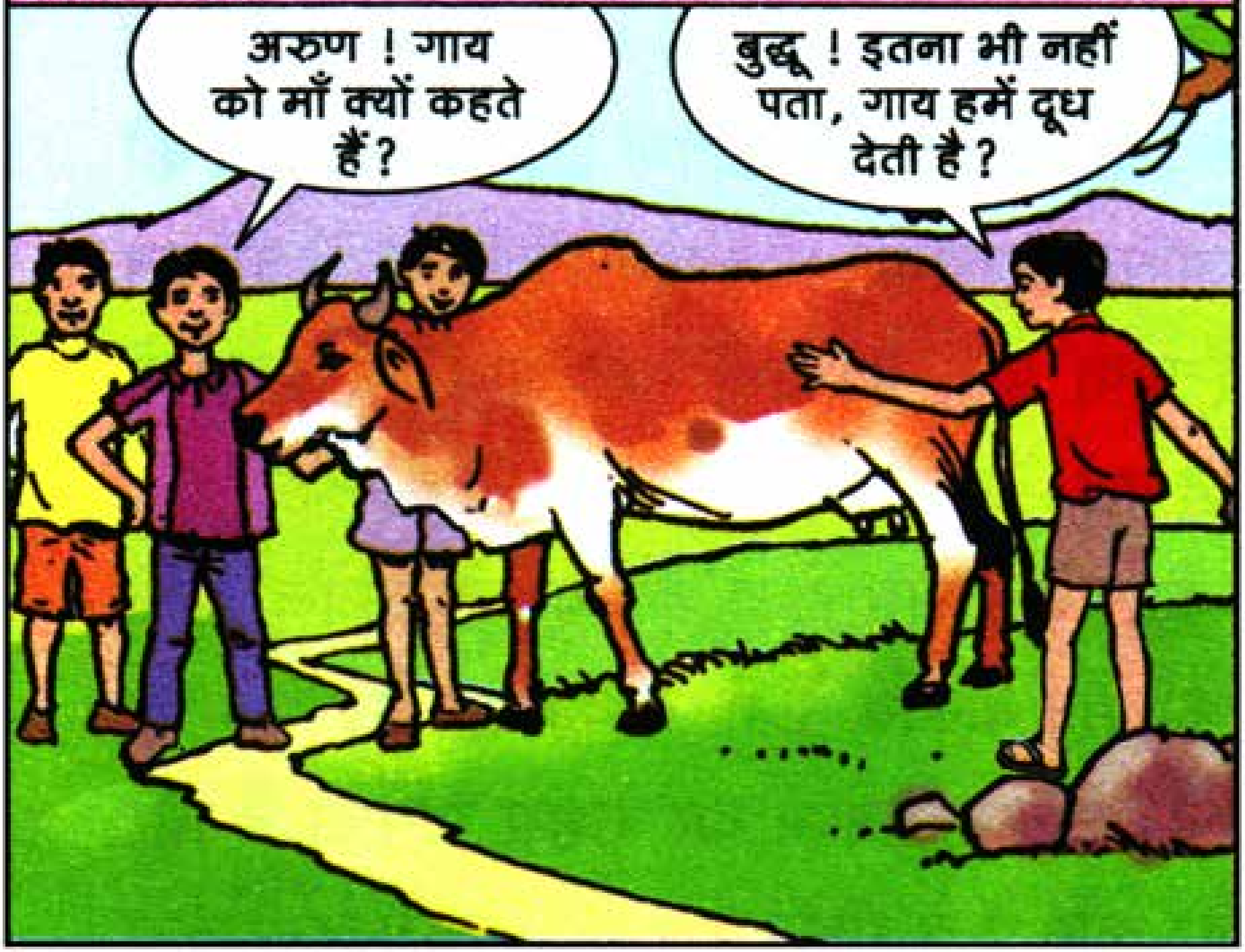

इस उत्तर पर रोहित को मजाक सूझा।
लो यह दूध देनेवाली भैंस माँ आ गई।
भैंस को माँ थोड़े ही कहा जाता है ?

रोहित ने फिर प्रश्न दागा।
क्यों भैंस भी तो हमें दूध देती है ? फिर उसे माँ क्यों नहीं कहते ?
माँ का पद तो गाय को मिल गया। फिर भैंस को माँ कैसे कहेंगे ?

रोहित के मन में नया प्रश्न उठा।

रोहित के प्रश्न पर सबको मजा आ गया। बकरी को देख

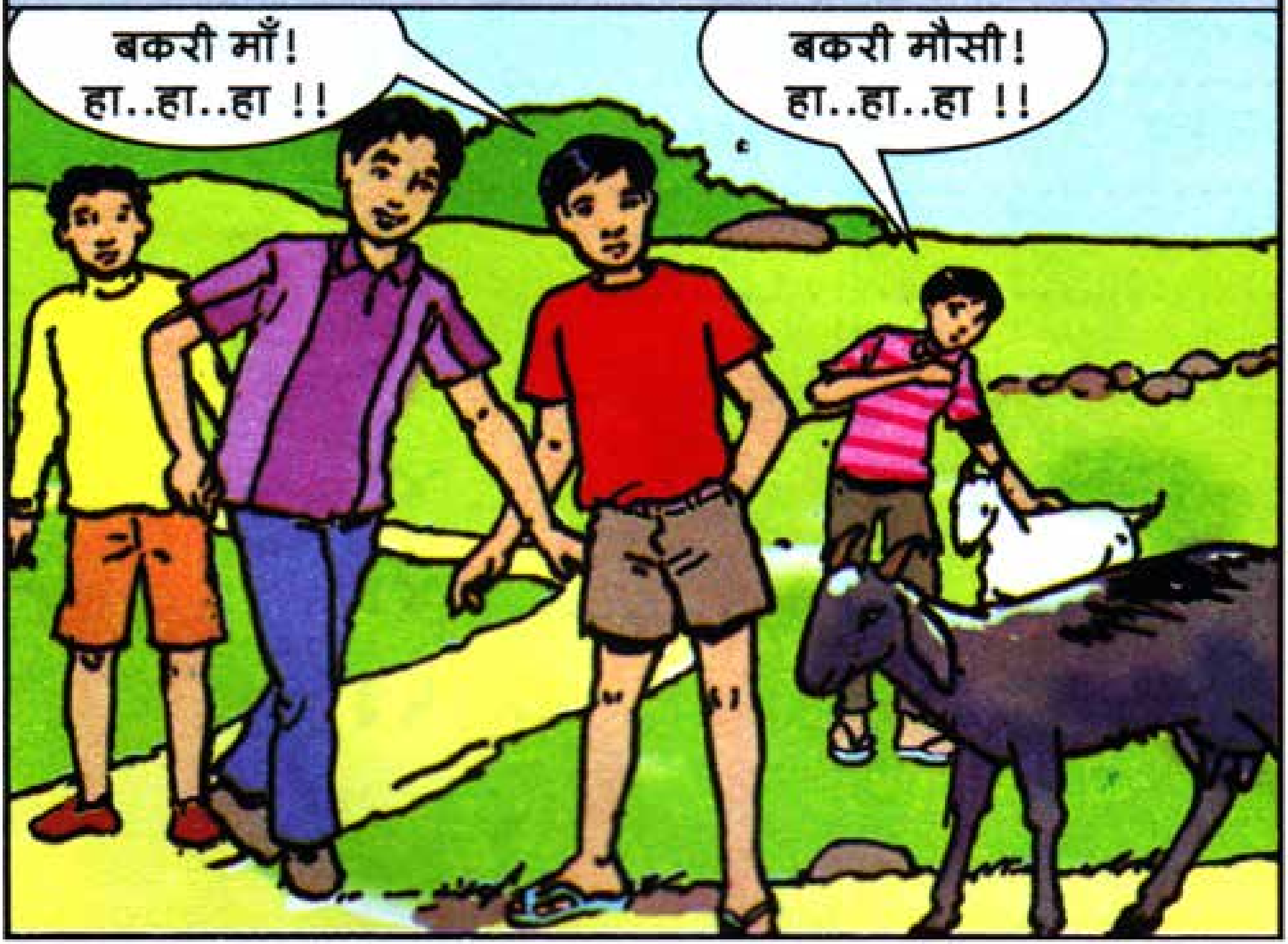

अरुण समझ गया कि रोहित का प्रश्न इतना सरल नहीं है।

दामू भैया! गाय को माँ क्यों कहते हैं?
एक दिन की बात है-मैं गाय-भैंस-बकरियों को चरा रहा था।

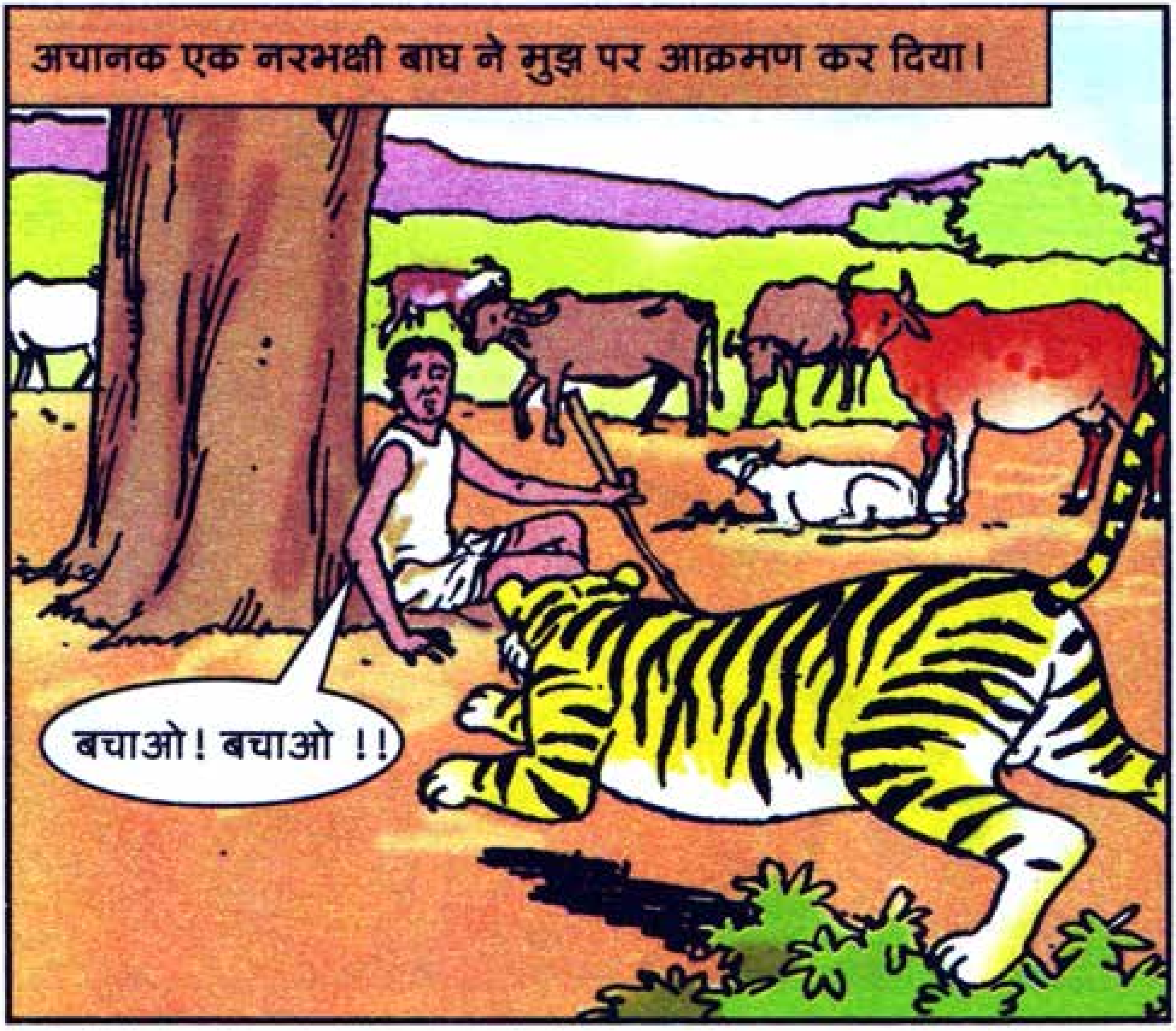
अचानक एक नरभक्षी बाघ ने मुझ पर आक्रमण कर दिया।
बचाओ! बचाओ !!

भैंसे–बकरियाँ भाग गईं। जबकि गायों ने मुझे घेरकर उस पर आक्रमण कर दिया।

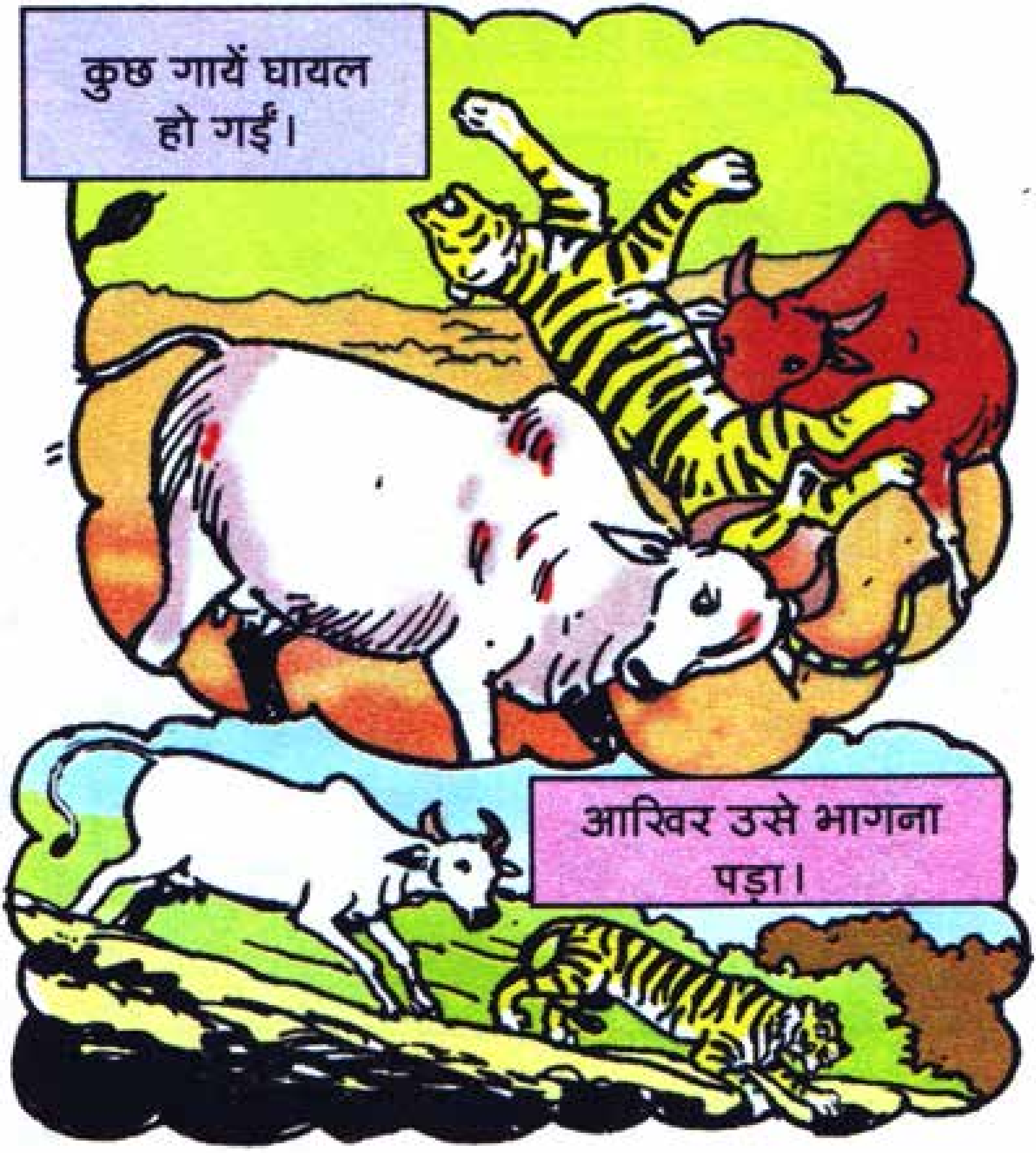
कुछ गायें घायल हो गईं।
आखिर उसे भागना पड़ा।

गाय माँ की तरह अपने प्राणों की चिंता न कर हमारी रक्षा करती है, इसलिए हम उसे माँ कहते हैं।

बछड़े को संस्कृत में वत्स कहते हैं। वत्स से ही बना है वात्सल्य अर्थात् माँ का प्रेम।